केन्द्रीय विद्यालय ए0एफ0एस0 मनौरी इलाहाबाद
प्रथम इकाई परीक्षा 2017
विषय– हिन्दी
कक्षा– अष्टम

समय 90 मिनट **पूर्णांक 40**

टिप्पणी–

सभी प्रष्नों के उत्तर निर्देषानुसार सुंदर साफ सुथरे ढंग से करें।

(खंड क अपठित)

1. नीचे लिखे गद्यांश को पढ़कर उससे सम्बंधित प्रश्नों के उत्तर दो। (5)

स्वावलम्बन का अर्थ है आत्म–निर्भरता। मन, कर्म एवं वचन से स्वावलंबी होना ही ' स्वावलंबन' है। हम सभी अपने निर्णय आप लेने में सक्षम हों, अपने कार्य स्वयं सोच–समझकर अपने उद्गार प्रकट करें, यही स्वावलंबन के लक्षण हैं। इसके द्वारा हम मानसिक एवं शारीरिक रूप से उन्नत हो सकतें हैं। ईश्वर भी स्वावलंबी व्यक्ति की सहायता करता है। कहावत है– अपनी सहायता करने वाले की भगवान भी सहायता करता है। स्वावलम्बन से हममें आत्म–विश्वास की भावना का उदय होता है। हमारा आत्म बल बढ़ता है और हम प्रगति के सोपान पर अग्रसर होते हैं। यदि स्वावलंम्बन की भावना न हो तो हम पशु–समाज के समान ही दूसरों पर आश्रित हो जाएँगे। स्वावलंम्बी बन कर ही मनुष्य समाज एवं राष्ट्र का कल्याण कर सकता हैं। विद्यार्थियों को विद्यार्थी जीवन में ही इस गुण को अपने अंदर विकसित कर लेना चाहिए, क्योंकि वह ही देश के भावी कर्णधार हैं।

प्र0.क. स्वावलम्बन का अर्थ है–
(1) धर्म निरपेक्षता (2) आत्म निर्भरता (3) परोपकार
(4) पराश्रितपन
(ख) ईश्वर किसकी सहायता करते हैं?
(1) जो दूसरों की सहायता करते हैं।
(2) जो अपनी सहायता स्वंय करते हैं।
(3) जो भगवान की मदद के भरोसे रहते हैं।
(4) जो भगवान की दिन–रात पूजा करते हैं।
(ग) देश के भावी कर्णधार कौन है?
(1) देश के निवासी। (2) देश के नेता । (3) स्वावलम्बी व्यक्ति
(4) विद्यार्थीगण
(घ) इस गद्यांश का उचित शीर्षक होगा।
(1) लोंगों का कर्त्तव्य। (2) विद्यार्थी का दायित्व। (3) स्वावलम्बन का महत्व
(4) परिश्रम का महत्व
(ड़) स्वावलम्बन और ईश्वर के एक एक समानार्थीशब्द लिखे।

2. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर उस पर आश्रित पश्नों के उत्तर दें। (5)

पथ भूल न जाना पथिक कहीं
पथ में कांटे तो होंगे ही,
दूर्वादल–सरिता, सर होंगे।
सुंदर गिरि वन–वापी होंगी,
सुंदर–सुंदर निर्झर होंगे।
सुन्दरता की मृगतृण्णा में,
पथ भूल न जाना पथिक कहीं।।
जब कठिन कर्म– पगडंडी पर,
राही का मन उन्मुख होगा।
जब सपने सब मिट जाएँगे,
कर्तव्य मार्ग सन्मुख होगा।
तब अपनी प्रथम विफलता में,
पथ भूल न जाना पथिक कही
चलते रहना चलते रहना, चलते रहना,
तुम पथिक वहीं।
मिल जायगी भंजिल तेरी।
पथ भूल न जाना पथिक कहीं।

(क) कवि राही से क्या कहना चाहता हैं?
  (1) कांटो से बंचकर चलने के लिए,
  (2) सरिता पर विश्राम करने के लिए,
  (3) रास्ता भूले बिना निरतंर चलने के लिए
  (4) अपने परायों को पहचानने के लिए

(ख) कवि ने सुन्दरता को मृग तृणा क्यों कहा है?
  (1) मृग की सुंदरता के कारण
  (2) मृग सुंदरता का प्रतीक है
  (3) मृग तृणा पथिक को सुंदर लगती है
  (4) पथिक सुन्दरता में भटक कर लक्ष्य भूल जाता है।

(ग) पथिक के मार्ग में क्या–क्या कठिनाइयाँ आ सकतीं है?
  (1) अपने पराए बन जाते हैं
  (2) कदम–कदम पर निराशा मिल सकती हैं
  (3) मार्ग में वह अकेले पड़ सकता है
  (4) उपर्युक्त सभी

(घ) सरिता शब्द किसका पर्यायवाची है
  (1) सगार का (2) नदी का (3) तालाब का
  (4) झील का

(ड़) पथिक को मंजिल कब मिल जाती हैं?

3. नीचे लिखी काव्य पंक्तियों को पढ़कर उत्तर दें (5)

(क) पक्षी और बादल,
यह भगवान के डाकिए हैं
जो एक महादेश से
दूसरे महादेश को जाते हैं
मगर उनकी लाई चिट्ठियां
पेड़ पौंधे पानी और पहाड़ बाँचते हैं।

(1) कवि और कविता का नाम लिखो।

(2) भगवान के डाकिए कौन–कौन हैं?

(3) पंक्षी, बादल द्वारा लाई चिट्ठियों को कौन बाँचता हैं?

(4) इस कविता का एक सन्देश लिखों।

(5) पक्षी, बादल के एक एक समानार्थी शब्द लिखें।

4. लेखक हर एक पेड़ को अपना दुश्मन क्यों समझ रहा था? (5)

अथवा

दीवानों की हस्ती कविता में दीवानों की क्या विशेषताएँ बतायी गयी हैं?

5. वस्तु विनिमय क्या है? इस प्रश्न का उत्तर लाख की चूड़ियॉ पाठ के आधार पर दो। (5)

6. सिन्धु धाटी की सभ्यता का विस्तार कहां से कहां तक है? इसकी विशेषताएँ लिखो। (5)

7. अपने प्रधानाचार्य को 05 दिन के अवकाश हेतु प्रार्थना पत्र दो जिसमें ऑफ अपनी दीदी की शादी में सामिल हो रहे हैं, का विवरण दो। (5)

8. (क) अपनी पाठ्य पुस्तक की 04 पंक्ति की एक कविता लिखो। (5)

(ख) अपने विद्यालय अथवा अनुशासन पर एक अनुच्छेद लिखो।

(ग) बस, वश, बस शब्द का एक वाक्य बनाएँ जिसका अलग, अलग अर्थ हो।

(घ) दूध और आग के तत्सम शब्द लिखो।

(ड़) बदलू <u>मनिहार</u> था। रेखांकित शब्द में संज्ञा के प्रकार बताएँ।